



भविष्य के फ्रेम्स

सिनेमा, रचनात्मकता और एआई

06 मार्च, 2026

चर्चा में उठे सवाल

भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर चर्चा एल्गोरिदम और कंप्यूटिंग ताकत से आगे बढ़ते हुए कला के क्षेत्र तक पहुंची। फिल्म निर्माताओं, लेखकों, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों और नीति निर्धारकों ने खुद को एक ऐसे सवाल पर विचार करते हुए पाया, जो एक साथ ही तत्काल और गहराई से व्यक्तिगत प्रतीत होता है: अगर मशीनें अब सीन लिख सकती हैं, फ्रेम डिजाइन कर सकती हैं और दर्शकों की प्रतिक्रिया का अनुमान लगा सकती हैं तो सिनेमा में विशिष्ट रूप से मानव क्या रहता है?

बहस को एक चिंता उत्पन्न करने वाले स्वर में पेश नहीं किया गया था, लेकिन जनरेटिव टूल्स और इंटेलिजेंट सिस्टम्स को लेकर बढ़ते उत्साह के पीछे एक मौन चिंता भी छिपी हुई है। सिनेमा हमेशा केवल उत्पादन क्षमता से कहीं आगे रहा है। यह यादों, जोखिमों, पहचान और जीवन के अनुभवों का वह माध्यम है जो गतिशील छवियों में व्यक्त होता है। जब एआई इस प्रक्रिया का हिस्सा बनता है, तो मुद्दा केवल स्वचालन तक सीमित नहीं रहता। यह असल में लेखन की मौलिकता और अधिकार के संदर्भ में सवाल उठाता है।

जो सामने दिख रहा है, वह मानव रचनात्मकता और मशीन इंटेलिजेंस के बीच कोई प्रतियोगिता नहीं है। यह सिनेमा के निर्माण के तरीके में बदलाव है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ब्रेकडाउन, विजुअलाइजेशन, संपादन और डेटा-संचालित विचार को संभालना शुरू कर रहा है, जिससे उत्पादन की गति और संरचना बदल रही है। फिर भी, कहानी स्मृति, संस्कृति और जीवंत अनुभव से प्रेरित होती है - ऐसे तत्व जिन्हें प्रौद्योगिकी सहारा तो दे सकती है, लेकिन स्वाभाविक रूप से उत्पन्न नहीं कर सकती। शिखर सम्मेलन की चर्चाओं ने इस उभरते संतुलन को सामने लाया: यह किसी चीज के खो जाने का भय नहीं था, बल्कि इस बात की जिज्ञासा थी कि आगामी वर्षों में लेखन, रचनात्मकता के पैमाने और जिम्मेदारी को किस तरह से नया रूप दिया जाएगा।

व्यवधान से पुनर्निर्माण तक

सिनेमा हमेशा तकनीक के साथ विकसित हुआ है, और लगभग हर छलांग संदेह के साथ आई है। कभी आवाज को मूक-युग की कलात्मकता के अंत के रूप में देखा जाता था। रंग को तमाशा के रूप में खारिज कर दिया गया था। बनावट की कमी के लिए डिजिटल कैमरों की आलोचना की गई थी। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म से सिनेमाघरों को स्थायी रूप से कमजोर करने की भविष्यवाणी की गई थी। फिर भी प्रत्येक बदलाव ने कहानी कहने के व्याकरण का विस्तार किया। रचनाकारों ने इसे अपनाया और एक माध्यम विकसित हुआ। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अगले विभक्ति बिंदु को चिह्नित करता है। पहले के बदलावों के विपरीत प्रारूप या वितरण बदल गया था, एआई रचनात्मक वर्कफ्लो में ही प्रवेश कर रहा है। आज इसका सबसे मजबूत प्रभाव उन कार्यों में निहित है जो दोहराए जाने वाले, समय-गहन या तकनीकी रूप से जटिल हैं। उद्योग के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जनरेटिव एआई फिल्म और टेलीविजन प्रोडक्शन की कई प्रक्रियाओं पर प्रभाव डाल सकता है। खासतौर पर, यह प्री-प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन चरणों में अहम भूमिका निभाता है, जहां यह कार्यक्षमता बढ़ाने और रचनात्मक फैसलों में सहायता प्रदान करने में सहायक साबित हो सकता है।



अभ्यास में इसके क्या मायने हैं?

- मशीन लर्निंग सिस्टम, जो विशाल मात्रा में स्क्रिप्ट पर प्रशिक्षित होते हैं, कथा संरचना, गति के पैटर्न और शैलीगत रुझानों का गहराई से विश्लेषण कर सकते हैं। स्टूडियो अब एआई उपकरणों का उपयोग करके दर्शकों की प्राथमिकताओं का मूल्यांकन करने और स्क्रिप्ट के विश्लेषण के जरिए संभावित राजस्व परिणामों का अनुमान लगाने की दिशा में काम कर रहे हैं। एआई-सक्षम प्री-विजुअलाइजेशन तकनीक फिल्म निर्माताओं को यह सुविधा प्रदान करती है कि वे निर्माण शुरू होने से पहले ही अपनी अवधारणाओं और विचारों का परीक्षण कर सकें, जिससे अनिश्चितता और लागत में कमी लाई जा सके।

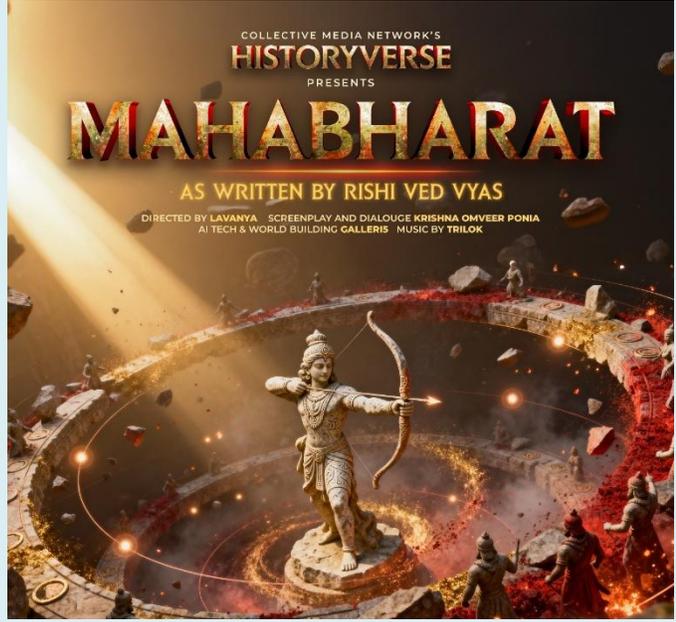
- प्री-प्रोडक्शन इंटेलेजेंस: एआई शेड्यूलिंग, स्थान योजना और लॉजिस्टिक समन्वय का समर्थन करता है जिससे प्रस्तुतियों में अधिक कुशल संसाधन प्रबंधन संभव होता है।
- कास्टिंग और चयन उपकरण: एआई प्लेटफॉर्म परिभाषित मानदंडों और टेक्स्ट इनपुट का उपयोग करके अभिनेता डेटाबेस को स्कैन करते हुए शॉर्टलिस्टिंग प्रक्रियाओं को तेज कर सकते हैं। हालांकि अंतिम निर्णय मानव द्वारा ही लिया जाता है, लेकिन खोज प्रक्रिया अधिक तेज़ और व्यवस्थित हो जाती है।
- वीएफएक्स और पोस्ट-प्रोडक्शन में तेजी: एआई दृश्य प्रभावों को उन्नत बनाता है, बारीक संपादन को स्वतः संपन्न करता है, रंग-संशोधन में सहयोग करता है और डिजिटल सुधार की प्रक्रिया को सरल बनाता है। एआई-आधारित सीजीआई ने वैश्विक सिनेमा में अभिनेताओं के डिजिटल पुनर्निर्माण को संभव बनाया है, जो तकनीकी योग्यता के साथ-साथ नैतिक जटिलताओं को भी उजागर करता है।
- बहुभाषी डबिंग और स्थानीयकरण: एआई संचालित प्रणाली जो अनुवादित ऑडियो को लिप मूवमेंट के साथ समन्वित करती हैं, सहज क्रॉस-भाषा अनुकूलन को संभव बना रही हैं। भारतीय अनुसंधान तंत्र से उभरते नवाचार बहुभाषी आउटपुट को अधिक प्रभावशाली बनाने में योगदान दे रहे हैं, जिससे क्षेत्रीय सिनेमा की पहुंच व्यापक हो रही है।
- अनुशंसा और सामग्री खोज: स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म अब काफी हद तक एआई आधारित अनुशंसा सिस्टम पर निर्भर हो गए हैं। प्रमुख प्लेटफॉर्म पर उपभोक्ताओं द्वारा देखी जाने वाली सामग्री का बड़ा हिस्सा एल्गोरिदमिक सिफारिशों पर आधारित होता है। एआई न केवल थंबनेल का चयन करता है और पूर्वावलोकन तैयार करता है, बल्कि प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण के माध्यम से खोज क्षमताओं को भी बेहतर बनाता है। यह पूरी प्रक्रिया यह निर्धारित करती है कि सामग्री की खोज और खपत किस प्रकार होती है।

इन अनुप्रयोगों में, एक सुसंगत पैटर्न उभरता है। एआई निष्पादन को तेज करता है, दक्षता में सुधार करता है और पैमाने का विस्तार करता है। यह पैटर्न का विश्लेषण करता है। यह पुनरावृत्ति को स्वचालित करता है और वितरण को अनुकूलित करता है।

यह जीवित अनुभव, सांस्कृतिक बारीकियों या भावनात्मक स्मृति की उत्पत्ति नहीं करता है।

एआई और विरासत का संगम: *महाभारत* की पुनर्कल्पना

आधुनिक एआई टूल्स की सहायता से भारत के प्रमुख महाकाव्य महाभारत को एक बार फिर पुनर्जीवित किया गया है। प्रसार भारती और कलेक्टिव मीडिया नेटवर्क के बीच हुए सहयोग ने टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए शानदार विजुअल्स तैयार किए, भव्य युद्ध दृश्य दोबारा निर्मित किए और पात्रों में नई गहराई जोड़ी। इस पूरी प्रक्रिया में मौलिक कहानी की आत्मा को पूरी तरह संरक्षित रखा गया।



यह सीरीज सबसे पहले वेक्स ओटीटी प्लेटफॉर्म पर प्रीमियर हुई और बाद में दूरदर्शन पर प्रसारित की गई। इसका उद्देश्य

यह दिखाने का था कि टेक्नोलॉजी का उपयोग परंपरा को बदलने के लिए नहीं, बल्कि इसे आधुनिक दर्शकों के साथ आत्मीयता से जोड़ने के लिए कैसे किया जा सकता है।

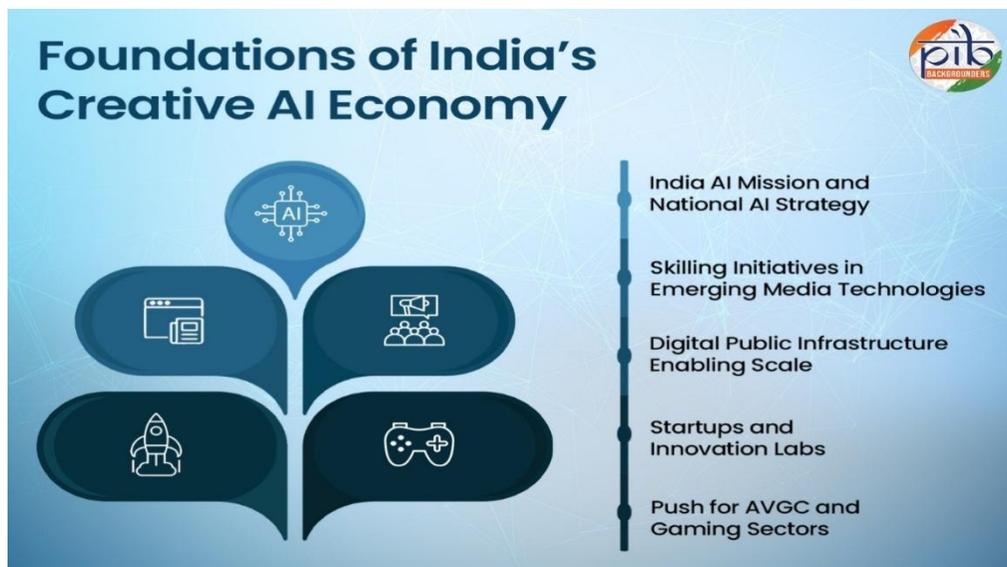
जैसे-जैसे उच्च-रिजॉल्यूशन कैमरे, सामग्री निर्माण सॉफ्टवेयर और एआई-सक्षम उपकरण अधिक सुलभ हो रहे हैं, उन्नत उत्पादन क्षमताएं अब केवल बड़े स्टूडियो तक सीमित नहीं रह गई हैं। एआई द्वारा संचालित योजना और विजुअलाइजेशन उपकरण न केवल प्रवेश की बाधाओं को कम कर रहे हैं, बल्कि स्वतंत्र रचनाकारों को भी उन्नत स्तर पर प्रयोग और प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

इसलिए, पुनर्निर्माण का उद्देश्य कहानीकार को बदलना नहीं है, बल्कि कहानी कहने के अनुकूल और आधुनिक बुनियादी ढांचे में बदलाव लाना है।

भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का संगम

भारत में सिनेमा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर होने वाली चर्चा अलग-थलग नहीं है। यह देश की रचनात्मक अर्थव्यवस्था में जारी एक व्यापक बदलाव का हिस्सा है। भारत दुनिया के सबसे बड़े फिल्मों के निर्माताओं में से एक है, जिसमें एक बहुभाषी इकोसिस्टम है जो क्षेत्रीय उद्योगों, स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और वैश्विक दर्शकों तक फैला हुआ है। जैसे-जैसे कहानी कहने की भाषा और प्रारूपों में विस्तार होता है, प्रौद्योगिकी न केवल एक सक्षमकर्ता बन जाती है, बल्कि बुनियादी ढांचा भी बन जाती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को अब मात्र एक उत्पादन उपकरण के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि इसे भारत की डिजिटल प्रगति के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक पहलू की तरह समझा जा रहा है। अब सवाल केवल यह नहीं रह गया है कि एआई मीडिया में नौकरियों को प्रभावित करेगा या नहीं। चर्चा इस ओर बढ़ चुकी है कि भारत इसका उपयोग कैसे इस प्रकार करेगा, जिससे रचनात्मक क्षमता को सशक्त बनाया जा सके, पहुंच को व्यापक किया जा सके और तेजी से विकसित हो रहे मनोरंजन इकोसिस्टम में इसकी जिम्मेदार और सार्थक तैनाती सुनिश्चित हो सके।



मूलभूत बुनियादी ढांचे के रूप में इंडियाएआई मिशन और राष्ट्रीय एआई रणनीति

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रति भारत का दृष्टिकोण एक सोची-समझी नींव पर टिका हुआ है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए राष्ट्रीय रणनीति ने "सभी के लिए एआई" दृष्टिकोण निर्धारित किया, जो एआई को समावेशी विकास, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का प्रमुख साधन बनाता है। इंडियाएआई मिशन उस दृष्टिकोण को बुनियादी ढांचे में तब्दील कर देता है, जहां गणना क्षमता को बढ़ाया जाता है, डेटासेट तक पहुंच सुलभ बनाई जाती है, स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन मिलता है और उन्नत कौशल को सुदृढ़ किया जाता है।

रणनीति और मिशन भारत के एआई इकोसिस्टम की रीढ़ हैं। रचनात्मक अर्थव्यवस्था के लिए, इसका मतलब है कि सिनेमा और मीडिया में प्रयोग को राष्ट्रीय गणना बुनियादी ढांचे, नवाचार वित्त पोषण और शासन ढांचे द्वारा समर्थित किया जाता है। इसलिए फिल्म में एआई उपकरणों को अलग से अपनाना नहीं

है। यह एक संरचित डिजिटल आर्किटेक्चर के भीतर उभर रहा है जिसे जिम्मेदारी से उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

एवीजीसी और गेमिंग क्षेत्रों में जोर

सिनेमा में भारत की एआई महत्वाकांक्षाओं को एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स (एवीजीसी) इकोसिस्टम के विस्तार के माध्यम से भी मजबूत किया जा रहा है। देश पहले से ही 1,900 से अधिक गेम डेवलपमेंट कंपनियों की मेजबानी करता है, जो लगभग 66,000 पेशेवरों को रोजगार देता है, जो 488 मिलियन ऑनलाइन गेमर्स के घरेलू आधार द्वारा समर्थित है।

भारत के स्टूडियो 40 से 60 प्रतिशत कम उत्पादन लागत पर वैश्विक वीएफएक्स और एनीमेशन पाइपलाइनों में योगदान करते हैं, जो 260,000 रचनाकारों और इंजीनियरों के अनुमानित कार्यबल द्वारा समर्थित है।

15,000 स्कूलों और 500 कॉलेजों में एवीजीसी कंटेंट क्रिएटर लैब्स का शुभारंभ संरचनात्मक गहराई का संकेत देता है। यह शिक्षा प्रणाली के भीतर डिजिटल कहानी कहने और एआई-सक्षम रचनात्मक उपकरणों को समाहित करता है। इंटेलिजेंट वर्कफ़्लो, एनीमेशन, इमर्सिव मीडिया और गेमिंग इंजनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनते जा रहे हैं, जिससे यह प्रयास किया जा रहा है कि भारत का उत्पादन क्षेत्र केवल तकनीकी बदलावों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय उनके साथ सामंजस्य बिठाते हुए प्रगतिशील रूप से विकसित हो।

उभरती मीडिया प्रौद्योगिकियों में कौशल पहल

यदि एआई फिर से परिभाषित कर रहा है कि कहानियों का उत्पादन कैसे किया जाता है, तो कौशल यह निर्धारित करता है कि उन्हें कौन बनाता है। भारत के क्रिएटिव-टेक टैलेंट आर्किटेक्चर में 37 से अधिक वीएफएक्स संस्थान, 16 से अधिक गेमिंग कॉलेज और 20 से अधिक एक्सआर-केंद्रित शैक्षणिक कार्यक्रम शामिल हैं।

एवीजीसी-एक्सआर के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप में आईआईसीटी को वैश्विक उत्पादन मानकों के साथ उन्नत अनुसंधान, उद्योग सहयोग और विशेष प्रशिक्षण के साथ जोड़ा गया है।

यह केवल कार्यबल का विस्तार नहीं है, यह क्षमता में बढ़ोतरी है। जैसे-जैसे एआई संपादन, शीघ्रता और स्थानीयकरण में तेजी ला रहा है, ध्यान उन रचनाकारों को तैयार करने पर केंद्रित है जो कुशल उत्पादन प्रक्रियाओं के भीतर डिज़ाइन करने, प्रबंधन करने और नवाचार करने की क्षमता रखते हों।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना सक्षम संरचना का पैमाना

एआई उपकरण तभी मूल्य प्रदान करते हैं, जब इसे बड़े पैमाने पर तैनात किया जाए। भारत की डिजिटल रीढ़ उसके लिए एक सशक्त आधार प्रदान करती है। 900 मिलियन से अधिक ब्रॉडबैंड कनेक्शन और 562 मिलियन सक्रिय स्मार्टफोन के साथ, देश दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल सामग्री इकोसिस्टम का संचालन करता है।

2024 में, मीडिया और मनोरंजन क्षेत्र के राजस्व में डिजिटल मीडिया का हिस्सा 32 प्रतिशत था जो इसके सबसे बड़े खंड के रूप में उभरा है।

यह पैमाना भागीदारी का लोकतंत्रीकरण करता है। छोटे स्टूडियो, स्वतंत्र फिल्म निर्माता और क्षेत्रीय निर्माता तेजी से वितरित, मुद्राकरण और पुनरावृत्ति कर सकते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में एआई-संचालित उपकरण केवल संपादन, स्थानीयकरण और ऑडियंस एनालिटिक्स तक सीमित नहीं रहते। वे एक तेज़-तर्रार रचनात्मक बाजार के अभिन्न पहलू बन जाते हैं।

स्टार्टअप और इनोवेशन लैब्स की भूमिका

भारत का रचनात्मक परिवर्तन तेजी से उद्यम-संचालित हो रहा है। देश में मीडिया और सामग्री क्षमता समूहों सहित 1,580 से अधिक वैश्विक क्षमता केंद्र हैं।

स्टूडियो और स्टार्टअप एआई-संचालित उत्पादन वर्कफ़्लो, रीयल-टाइम रेंडरिंग इंजन और इमर्सिव तकनीकों को मुख्यधारा के संचालन में एकीकृत कर रहे हैं। यह गति इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में दिखाई दी, जहां दर्जनों क्रिएटिव-टेक स्टार्टअप ने एनीमेशन, एक्सआर, स्थानीयकरण और डिजिटल स्टोरीटेलिंग में एआई अनुप्रयोगों का प्रदर्शन किया, जो यह दर्शाता है कि नवाचार, प्रयोग से उद्योग की ओर बढ़ रहा है।

सरकार द्वारा समर्थित इनक्यूबेशन और स्टार्टअप फ्रेमवर्क नए क्रिएटिव-टेक उद्यमों के लिए प्रवेश की बाधाओं को कम करते हैं और उनके प्रोटोटाइप से लेकर तैनाती तक की प्रक्रिया को तेज करने में मदद करते हैं।

नवाचार, रचनात्मक अर्थव्यवस्था का एक केंद्रीय हिस्सा है, कोई परिधीय तत्व नहीं। इसे संस्थागत बनाया जा रहा है। इसलिए भारतीय सिनेमा में एआई अलग-थलग नहीं है। इसे क्षेत्रीय स्तर, प्रतिभा के स्रोत, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और उद्यमशीलता की शक्ति का समर्थन हासिल है। यह न केवल उन्नत मीडिया तकनीकों को अपनाते में मदद करता है, बल्कि एक ऐसा तंत्र तैयार करता है, जो इन्हें प्रभावी रूप से परिभाषित और आकार देने में सक्षम बनाता है।

मानवीय मूल्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कुछ ही सेकंडों में किसी दृश्य को तैयार कर सकता है। यह न केवल पृष्ठभूमि संगीत की रचना करता है, बल्कि चेहरे उत्पन्न करने, आवाजे दोबारा बनाने और मात्र संकेतों के आधार पर एक पूरी दृश्यात्मक दुनिया का निर्माण करने में सक्षम है। यह हजारों स्क्रिप्ट का विश्लेषण कर यह भी समझा सकता है कि आमतौर पर क्या प्रभावी होता है।

लेकिन सिनेमा का सार हमेशा से उसके प्रयोग और अनूठेपन में रहा है, न कि सिर्फ उस पर जो आमतौर पर कारगर होता है।

यह कहानी एक निर्देशक की है, जो अंत चुनते समय तर्क से अधिक दिल की सुनता है, भले ही वह उम्मीदों के विपरीत लगे, एक अभिनेता की है, जो खामोशी के एक लम्हे को संवाद से भी गहरी अभिव्यक्ति देने देता है और एक लेखक की, जो केवल विचारों के ढांचे पर नहीं, बल्कि स्मृतियों, भावनाओं और जीवन के अनुभवों पर आधारित कहानियां गढ़ता है। एआई अवसर पैदा कर सकता है, लेकिन ये मनुष्य हैं जो यह तय करते हैं कि इनमें से कौन-से अवसरों को सही मायनों में अपनाया जाए।

मशीनें, बीते समय के पैटर्न को दोहराकर प्रस्तुत कर सकती हैं, लेकिन कलाकार जोखिम लेकर भविष्य की नई दुनिया गढ़ते हैं।

असली समस्या रचनात्मकता खत्म होने की नहीं है, बल्कि इसके पूर्वानुमान बनने की है। अगर कहानियां केवल पुराने सफल मॉडल्स पर आधारित एल्गोरिद्म से निर्मित होती हैं, तो वे बेहद निपुण तो हो सकती हैं, पर संवेदनाओं से रहित और सपाट होंगी। सिनेमा जीवित है क्योंकि यह दर्शकों को चौंकाता है, अस्थिर करता है और अपने प्रभाव को लंबे समय तक बनाए रखता है।

और साथ ही, एआई के जरिए मिलने वाले लाभों को अनदेखा करना मुश्किल है। यह रचनात्मक प्रक्रिया को सरल बना सकता है, निर्माण समय कम कर सकता है और उन्नत तकनीकों को हर व्यक्ति की पहुंच में ला सकता है। आज एक साधारण फिल्म निर्माता भी बिना बड़े स्टूडियो के सहयोग के जटिल दृश्यों की कल्पना कर सकता है। क्षेत्रीय कहानियां एआई-सक्षम स्थानीयकरण के माध्यम से वैश्विक दर्शकों तक पहुंच सकती हैं। इस बदलाव को प्रतिस्थापन के रूप में देखना गलत होगा। दरअसल यह रचनात्मकता का विस्तार है।

इसलिए सवाल यह नहीं है कि भारत एआई का विरोध करेगा या नहीं। असली सवाल यह है कि भारतीय सिनेमा किस तरह एआई को अपनाएगा। कहानीकारों का काम होगा इन प्रणालियों में मानवीय संवेदनाओं को शामिल करना। निर्देशक, लेखक और एनिमेटर सुनिश्चित करेंगे कि तकनीक रचनात्मकता को सीमित करने के बजाय उसे नया आयाम दे।

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट में चर्चा इस चिंता के साथ शुरू हुई कि कहीं एआई रचनात्मक नौकरियां छीन न ले। लेकिन स्पष्ट परिणाम यही था कि जिम्मेदारी तकनीक को रोकने में नहीं, बल्कि उसे सही दिशा देने में है।

भारतीय सिनेमा का भविष्य एआई के विरोध से तय नहीं होगा, बल्कि इस पर निर्भर करेगा कि हम अपनी सोच व विचार कैसे इन बुद्धिमान तकनीकों में समाहित करें।

क्योंकि जब पर्दा उठता है और पहला दृश्य सामने आता है, तो जो दर्शक के दिल को छूता है वह कोई गणना या समीकरण नहीं होता। वह जुड़ाव होता है।



AI Generated Image

संदर्भ:

- <https://indiaai.gov.in/article/redefining-the-means-of-entertainment-with-ai?utm>
- <https://blogs.iiit.ac.in/technology-in-films/?utm>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2177206®=3&lang=2>
- <https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2023-03/National-Strategy-for-Artificial-Intelligence.pdf>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2012375®=3&lang=2>
- https://mib.gov.in/sites/default/files/2025-06/a-studio-called-india_0.pdf
- <https://www.mckinsey.com/capabilities/tech-and-ai/our-insights/tech-forward/how-ai-could-reinvent-film-and-tv-production>
- <https://www.morganstanley.com/insights/articles/ai-in-media-entertainment-benefits-and-risks>

- <https://artsandculture.google.com/story/decoding-the-decades-mode/5QUh5oTCloSWGA?hl=en>
- <https://artsandculture.google.com/project/hindi-cinema?hl=en>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetailm.aspx?PRID=2228593®=3&lang=2>
- <https://ddnews.gov.in/en/ai-impact-summit-2026-mib-pavilion-showcases-indias-ai-capabilities-startup-depth/>
- <https://impact.indiaai.gov.in/>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/बीयू/एसएस